UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

JRF का जलवा

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान
सामान्य परिचय

UNIT=5

Daily = 6 pm

Class = 89

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d purshuing

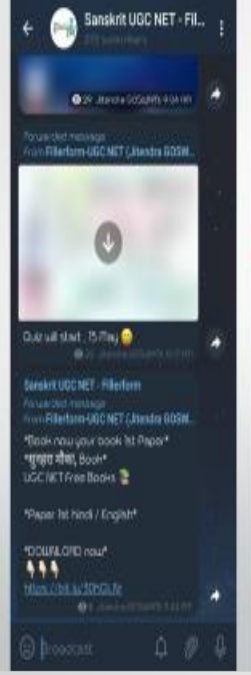

Filler Form
UGC NET Paper 1st
Teaching Aptitude
Quizzes
Notes
Sample Papers
UGC NET 100%
Off Free Class
Free Notes
Live Class
100% off
5000+MCQ+PYQ
Free Books
fillerform

NET Free Class
09:00 AM- GK Class
11:00 AM- Paper 1st
12:00 PM - Hindi 2nd
01:00 PM- History 2nd
02:00 PM- Paper 1st MCQ
03:00 PM- Commerce 2nd
06:00 PM- Sanskrit 2nd
07:00 PM - Short video(notes)
08:00 PM- Job/PhD update
09:00 PM- Paper 1st DI
Fillerform

m

8233651148
www.ugc-net.com
How To download Notes
www.ugc-net.com

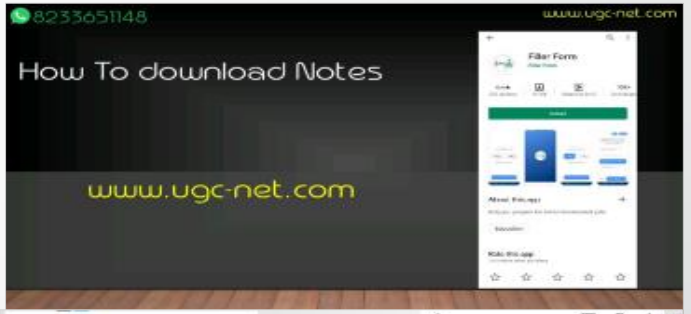

UGC NET- Sanskrit Paper 2

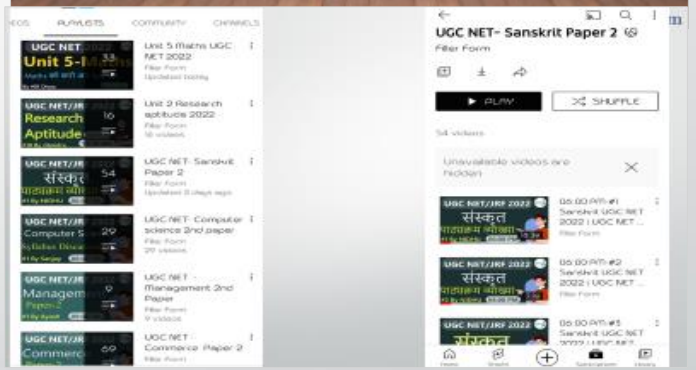

www.ugc-net.com
Complete syllabus....
Unit = 1
Unit = 2
Unit = 3
Unit = 4
Unit = 9
Unit = 10
Unit = 7
Unit = 8
Unit = 5 continue...

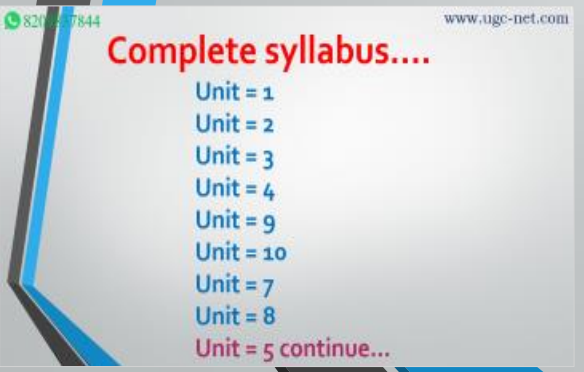

www.ugc-net.com
We want JRF
JRF का जलवा
We want JRF

UGC NET Giveaway
GIVEAWAY
www.ugc-net.com
Fillerform
8209837844

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

Sanskrit UGC NET - Fil...
272 subscribers

29 Jitendra GOSWAMI, 9:04 AM

Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...

Quiz will start , 15 May 😀
22 Jitendra GOSWAMI, 10:17 AM

Sanskrit UGC NET - Fillerform
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra GOSW...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
8 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Broadcast

SANSKRIT BY NIDHU
25 members

MJ

2:42 PM

Fillar From
Forwarded message
From Fillerform-UGC NET (Jitendra...
Book now your book 1st Paper
सुनहरा मौका, Book
UGC NET Free Books 📚

Paper 1st hindi / English

DOWNLOAD now
👇👇👇
https://bit.ly/30KQLNr
344 Jitendra GOSWAMI, 3:44 PM

Maya Jatwa
Photo
Very good 👍 4:59 PM

Message

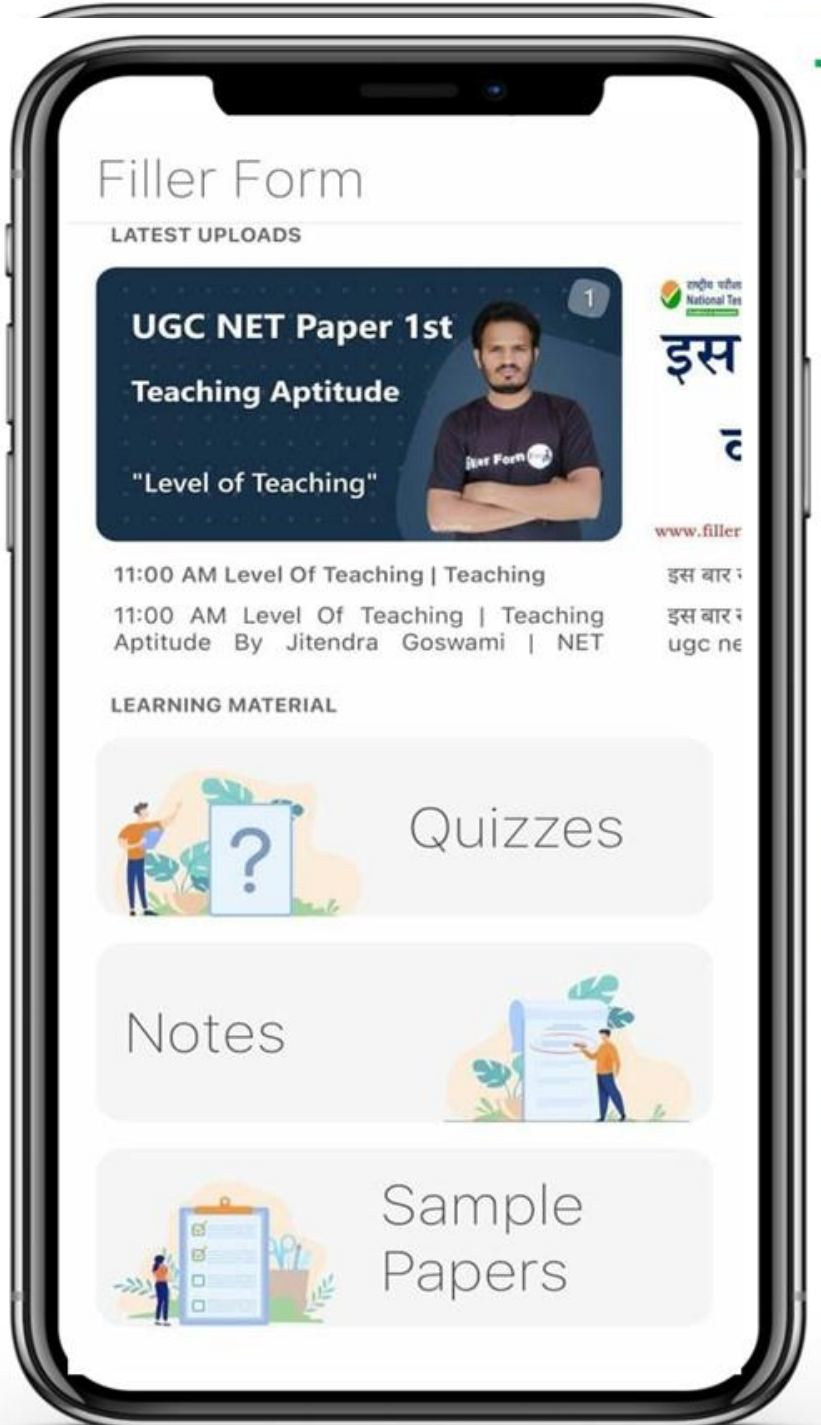

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

100% OFF

5000+MCQ+PYQ

Free Books

fillerform

8209837844

www.ugc-net.com

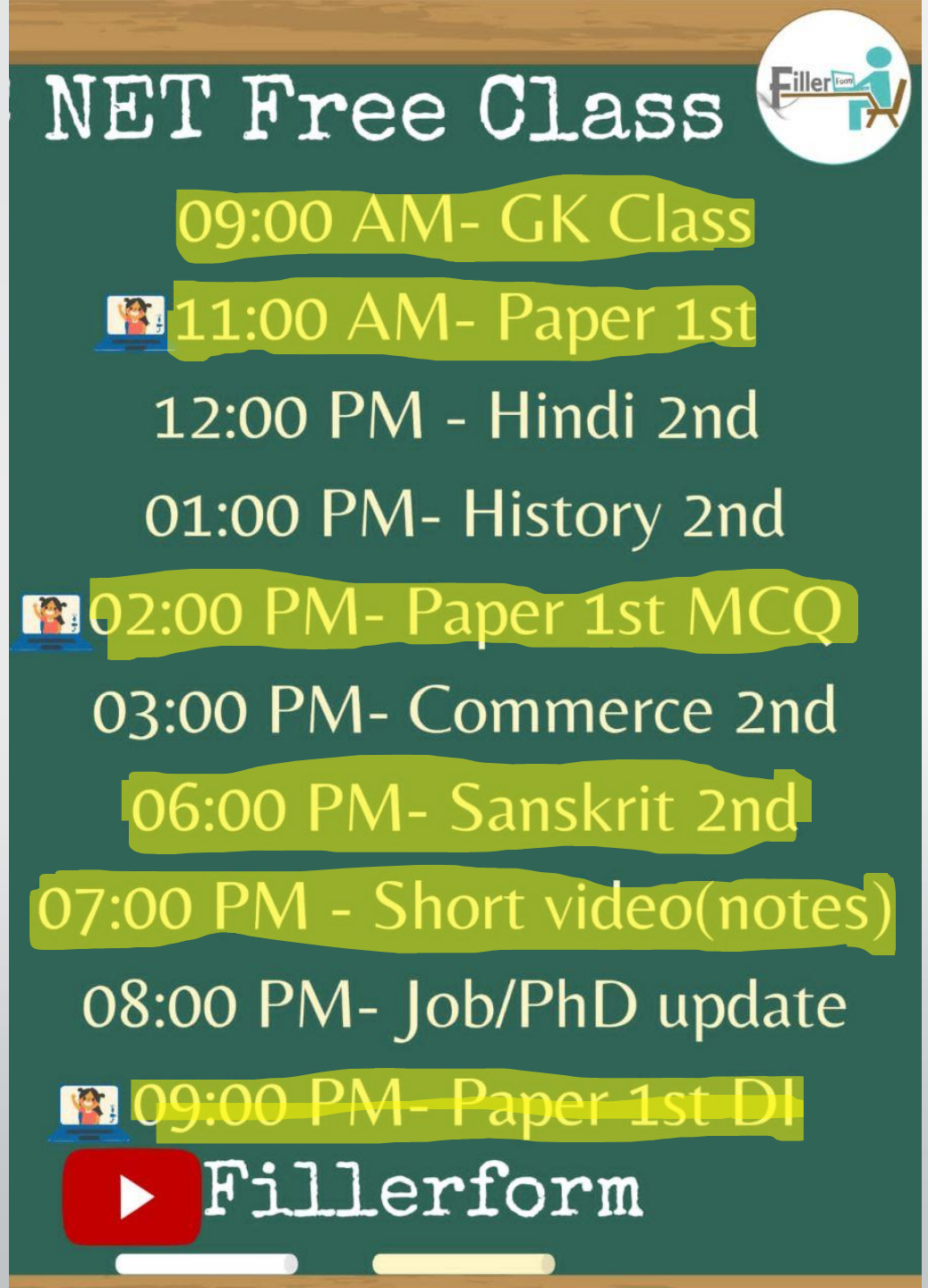

8233651148

www.ugc-net.com

How To download Notes

www.ugc-net.com

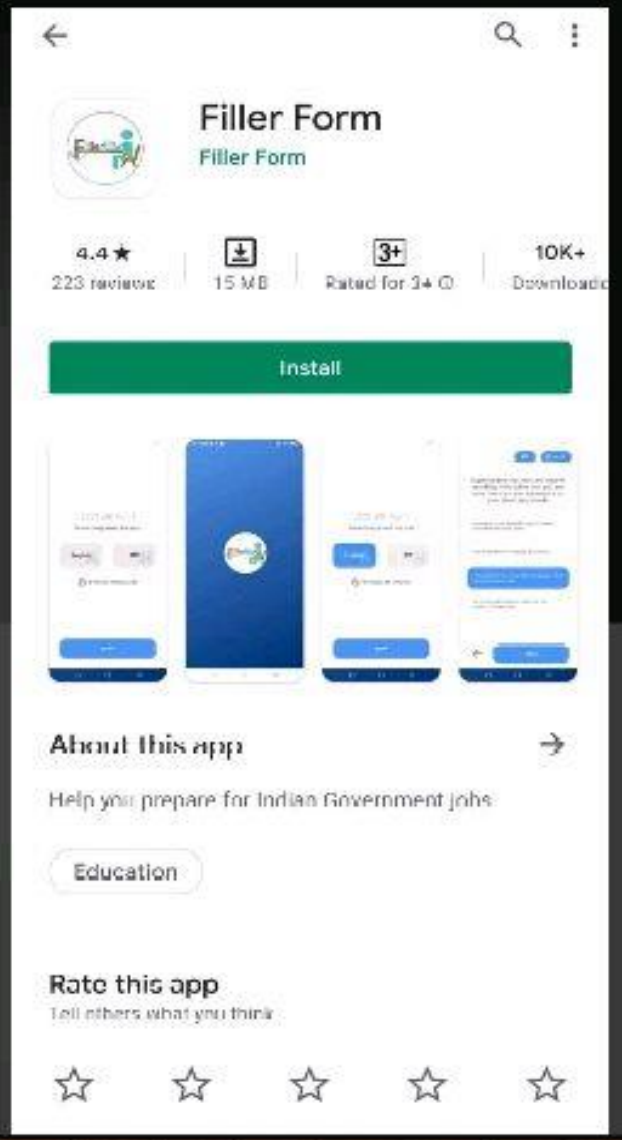

EOS PLAYLISTS COMMUNITY CHANNELS

Unit 5 Maths UGC NET 2022
Filler Form
Updated today

Unit 2 Research aptitude 2022
Filler Form
16 videos

UGC NET- Sanskrit Paper 2
Filler Form
Updated 2 days ago

UGC NET- Computer science 2nd paper
Filler Form
29 videos

UGC NET - Management 2nd Paper
Filler Form
9 videos

UGC NET - Commerce Paper 2
Filler Form

UGC NET- Sanskrit Paper 2

Filler Form

PLAY SHUFFLE

54 videos

Unavailable videos are hidden

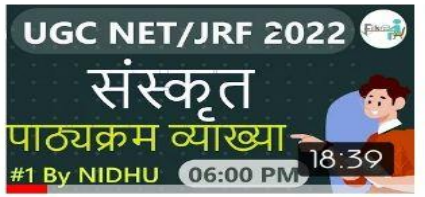

06:00 PM-#1 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

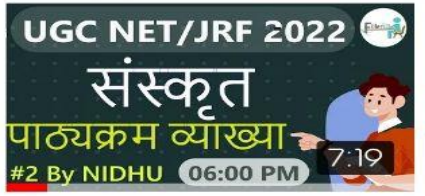

06:00 PM-#2 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET ...
Filler Form

06:00 PM-#3 Sanskrit UGC NET 2022 | UGC NET

Home Shorts Subscriptions Library

UGC NET Giveaway

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

UGC NET Giveaway

Free Smart Watch

Apply Now

www.ugc-net.com

Fillerform

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

We want JRF

We want JRF

8209837844

www.ugc-net.com

Complete syllabus....

Unit = 1

Unit = 2

Unit = 3

Unit = 4

Unit = 9

Unit = 10

Unit = 7

Unit = 8

Unit = 5 continue...

Today's Topic....

॥ध्वनि नियम॥

8209983784

ugc-net.com

॥ध्वनि नियम॥

परिभाषा - किसी भाषा विशेष में किसी कालविशेष में कुछ विशेष - परिवर्तनों को -परिस्थितियों के अन्तर्गत हुए विशेष प्रकार के ध्वनि ध्वनि-नियम कहते हैं।

विशिष्ट ध्वनि नियम-

1. ग्रिम नियम
2. ग्रासमान-नियम
3. वर्नर नियम
4. तालव्य नियम
5. मूर्धन्य-नियम

8209837844 www.ugc-net.com

1. ग्रिम, ग्रासमान और वर्नर नियम मूल भारोपीय भाषा से संबद्ध है। इन नियमों में मूल भारोपीय भाषा की ध्वनियों में परिवर्तन का वर्णन है।

1. ग्रिम-नियम- इस नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियों को अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं-(प्रथम को द्वितीय, 1 को 2) क्रमशः क् त् प् को ह (ख्), थ्, फ्। (चतुर्थ को तृतीय, 4 को 3) क्रमशः घ् ध् भ् को ग् द् ब्। (तृतीय को प्रथम, 3 को 1) क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प्।

8209 … net.com

2. ग्रासमान नियम- इस नियम के अनुसार मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण (ह) ध्वनियाँ थीं। सामान्यतया प्रथम महाप्राण (ह) ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण (ह) ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।

3. वर्नर नियम- यह ग्रिम नियम का संशोधन है। यदि मूलभाषा में क् त् प् आदि से पूर्व उदात्त स्वर होगा तो ग्रिम नियमानुसार प्रथम वर्ण परिवर्तन नियम लगेगा। यदि उदात्त स्वर के त् प् के बाद होगा तो क् त् प् को ग् द् ब् होगा, अर्थात् आगे दिये त्रिकोण के अनुसार दो पग आगे का कार्य होगा।

8209837844

www.ugc-net.com

॥ग्रिम-नियम॥

ग्रिम-नियम का संक्षिप्त इतिहास-

यह ध्वनि-नियम प्रो० **याकोब ग्रिम** (Jacob Grimm, 1785-1863) के नाम से प्रसिद्ध है। इस नियम को **'ध्वनि-परिवर्तन'** (जर्मन में Laut-verschiebung, लाउत-ध्वनि, फेर्शीबुंग-परिवर्तन, अंग्रेजी में Sound-shifting-साउन्ड-ध्वनि, शिफ्टिग-परिवर्तन) नाम दिया गया था। **प्रो० मैक्समूलर (Max-Muller)** ने इसे Grimm's Law (ग्रिम-नियम) नाम दिया है। **प्रो० ओटो येस्पर्सन** (Oto-Jespersen) का कथन है कि इस नियम को **Rask's Law** रास्क-नियम नाम दिया जाना चाहिए, क्योंकि यह नियम डैनिश विद्वान् रास्क ने ही सर्वप्रथम प्रामाणिक रूप में अपनी पुस्तक (Undersogelse) में प्रकाशित किया था।' प्रो० ग्रिम ने इसके आधार पर ही इस नियम का विस्तृत वर्णन किया है। **प्रो० ग्रिम** ने 1822 ई० में अपने जर्मन व्याकरण (Deustche Grammatik, दायत्श-जर्मन, ग्रामातिक-व्याकरण) का द्वितीय संस्करण निकाला था। उसमें इस नियम का विस्तार से वर्णन किया है। इस नियम की ओर पहले संकेत करने के विषय में प्रो० रास्क के अतिरिक्त **प्रो० ईरे (Ihre)** का भी नाम लिया जाता है।

ग्रिम-नियम दो भागों में विभक्त है।

8209837844

www.ugc-net.com

प्रथम वर्ण-परिवर्तन (First sound shifting)- यह वर्ण-परिवर्तन ईसा के जन्म से पूर्व हो चुका था। इसका प्रभाव समान रूप से गाथिक, निम्न जर्मन और अंग्रेजी, डच आदि भाषाओं पर पड़ा है। भारोपीय मूलभाषा की व्यंजन ध्वनियाँ संस्कृत, लैटिन, ग्रीक आदि में सुरक्षित हैं। अंग्रेजी का उद्भव निम्न जर्मन से है, अत: इसके द्वारा संस्कृत और अंग्रेजी की तुलना से यह परिवर्तन स्पष्ट हो जाता है। इस वर्ण-परिवर्तन में एक ओर संस्कृत, लैटिन, ग्रीक, स्लावोनिक भाषाएँ हैं, इनमें मूल ध्वनि सुरक्षित है। दूसरी ओर गाथिक, निम्न जर्मन, अंग्रेजी, डच आदि भाषाएँ हैं, इनमें यह परिवर्तन हुआ है।

वर्ण परिवर्तन क्रम

१ को २

४ को ३

३ को १

8209837844

w.ugc-net.com

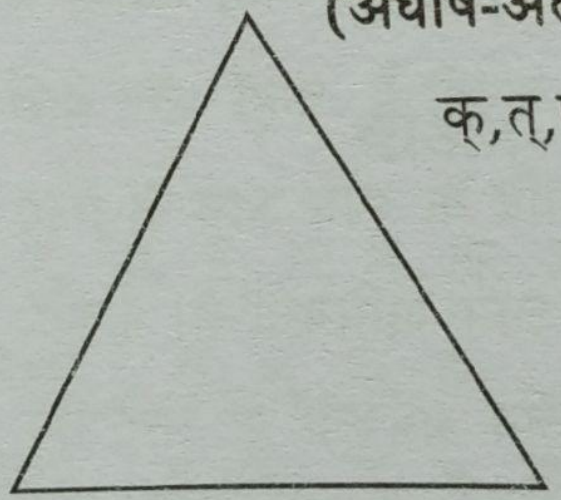

(अघोष-अल्पप्राण)

क्,त्,प्

(महाप्राण)

ख्(ह),थ,फ,

घ्, ध्, भ्,

(घोष-महाप्राण)

ग्, द्, ब्

ग्रिम नियम के अनुसार -(प्रथम को द्वितीय वर्ण होता है।1 को 2)

क्रमशः-

क् त् प् = ह(ख),थ् फ,(1 को 2)

घ् ध् भ् = ग्, द्, ब् (4 को 3)

ग् द् ब् = क् त् प् (3 को 1)

8209837844

w.ugc-net.com

द्वितीय वर्ण-परिवर्तन (Second sound shifting)- द्वितीय वर्ण-परिवर्तन 7वीं और 8वीं शती ई० में हुआ है। यह वर्ण-परिवर्तन केवल जर्मन भाषा के ही दो रूपों-उच्च और निम्नमें हुआ है। निम्न जर्मन की प्रतिनिधिभाषा अंग्रेजी है। यह परिवर्तन निम्न जर्मन और अंग्रेजी से उच्च जर्मन में हुआ है। निम्न जर्मन की कुछ ध्वनियाँ उच्च जर्मन में भिन्न हो गई हैं। ऊपर दिए गए त्रिकोण के अनुसार प्रथमवर्ण परिवर्तन में एक पग 'आगे चलते हैं। द्वितीयवर्ण परिवर्तन में एक पग और आगे चलते हैं।

निम्न जर्मन (Low German) और उच्च जर्मन (High German) के विषय में यह स्मरण रखना चाहिए कि यह अन्तर उच्च वर्ग और निम्न वर्ग से, अर्थात् व्यक्तियों से, नहीं है। जर्मनी का उत्तरी भाग समतल और नीचा है, अतः वहाँ बोली जाने वाली भाषा 'निम्न जर्मन' कही जाती है। निम्न जर्मन और अंग्रेजी में प्रथम वर्ण-परिवर्तन वाली ध्वनियाँ समान हैं।

82098 net.com

निम्न जर्मन की शाखाएँ हैं- आदि। जर्मनी में दक्षिणी पहाड़ी भाग में बोली जाने वाली भाषा को 'उच्च जर्मन' कहते हैं, क्योंकि यह ऊँचे पर्वतीय भाग में बोली जाती है। अंग्रेजी, डच, डैनिश, नार्वेई, स्वीडिश

वर्ण-परिवर्तन को इस प्रकार रखा जा सकता है-मूल भारोपीय भाषा (मू०आ०) > संस्कृत (सं०), ग्रीक (ग्री०), लैटिन (ले०) > निम्न जर्मन (नि. ज.), अंग्रेजी (अं) > उच्च जर्मन (उ. ज.)। संस्कृत के वर्ग के चतुर्थ घ् ध् भ् ग्रीक और लैटिन में द्वितीय वर्ण अर्थात् ख् थ् फ् हो जाते हैं। अत: उपर्युक्त त्रिकोण में चतुर्थ और द्वितीय वर्णों को एक स्थान पर रखा गया है।

8209837844
www.ugc-net.com

संस्कृत	अंग्रेजी	उच्च जर्मन
1. प्रथमवर्ण >	2. द्वितीयवर्ण >	3.तृतीयवर्ण
2. द्वितीय०>	3. तृतीय० >	1. प्रथम०
3. तृतीय० >	1. प्रथम० >	2. द्वितीय०
4. चतुर्थ० >	3. तृतीय० >	1. प्रथम०

इस प्रकार प्रथमवर्ण-परिवर्तन में संस्कृत के प्रथम वर्ण को अंग्रेजी में द्वितीय वर्ण, 2 और 4 को 3 तथा 3 को 1 होता है। प्रथम ध्वनि-परिवर्तन के लिए ग्रीक और लैटिन को छोड़कर मूल भारोपीय भाषा का प्रतिनिधि संस्कृत को लेने पर तथा निम्न जर्मन की प्रतिनिधि अंग्रेजी को लेने पर यह नियम स्पष्ट होता है और इसकी उपयोगिता ज्ञात होती है।

8209837

gc-net.com

॥ग्रासमान नियम॥

ग्रासमान नियम (Grassmann's Law) हेर्मान ग्रासमान (Hermann Grassmann, 1809-1877) भी जर्मन विद्वान् हैं। इन्होंने ग्रिम-नियम को संशोधित किया है और उसकी त्रुटियों का निराकरण किया है। निम्नलिखित उदाहरणों में ग्रिम-नियम के अनुसार ब् को प् और द् > त् होना चाहिए था, परन्तु गाथिक में भी ब् और द् ही मिलते हैं।

संस्कृत	गाथिक
बोधति	Biudan, बिउदान
दभ्	Daubs, दाउब्स

8209
net.com

प्रो० ग्रासमान ने संस्कृत और ग्रीक भाषाओं की परीक्षा करने पर यह पता लगाया कि- संस्कृत और ग्रीक भाषाओं में दो अव्यवहित सोष्म ध्वनियों में से सामान्यतया प्रथम ऊष्म ध्वनि (ह ध्वनि) निकल जाती है। जहाँ पर द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलती है, वहाँ पर प्रथम वर्ण में ऊष्म ध्वनि आ जाती है।

इस आधार पर यह कल्पना की गई कि मूल भारोपीय भाषा में दो अक्षरों वाली ऐसी धातुओं में दो महाप्राण ध्वनियाँ थीं उनमें से साधारणतया प्रथम ऊष्म ध्वनि (ह ध्वनि) निकल जाती थी और द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि निकलने पर वह प्रथम वर्ण में पुनः आ जाती थी।

8209837844

v.ugc-net.com

इस कल्पना का आधार प्राय: इस प्रकार था-

1. धा > धधामि > दधामि, पहले ध् को द्, ह ध्वनि हटी।

2. भृ > भभार > बभार, पहले भ् को ब्, ह ध्वनि हटी।

3. बुध् > भुत्, बुधौ, भुत्सु । बुधौ में पहले वर्ण से ऊष्म ध्वनि हटी है।

भुत्, भुत्सु में द्वितीय वर्ण से ऊष्म ध्वनि हटी है, अत: ब् > भ् हो गया अत: मूल धातु 'भुध्' (Bhudh) है।

4. दुह (मूल धातु, दुध्) >धुक्, दुहौ, धुग्भ्याम्, धुक्षु।

इस प्रकार **बुध् > भुध्** और दभ् > धभ् धातु हैं । मूल **'भुध्'** और **'धभ्'** धातु मानने पर **'भुध्'** से संस्कृत में बुध् धातु हुई और ग्रिम नियमानुसार भ् > ब् होने से Biudan बना। इसी प्रकार मूल धातु ' धभ्' > दभ् और गाथिक में ध् >द् होने से Daubs बना। ग्रीक भाषा में भी प्राय: ऐसे उदाहरण मिलते हैं।

8209837844

www.ugc-net.com

॥वर्नर नियम॥

कार्ल वर्नर (Karl Verner, 1846-1896) भी जर्मन भाषाशास्त्री हैं। इन्होंने भी ग्रिम-नियम का संशोधन किया है। ग्रिम-नियम के जो अपवाद रह गए थे, उनके विषय में वर्नर ने ज्ञात किया कि ग्रिम-नियम का आधार Accent (उदात्त स्वर) था। वर्नर नियम का स्वरूप-मूल भारोपीय भाषा के शब्दों के क्, त्, प् (k, t,p) को जर्मानिक भाषाओं में ह, थ्, फ् (h, th, f) तभी होता है, जब मूल भाषा में अव्यवहित पूर्व कोई उदात्त स्वर (Accent) होता है। यदि उदात्त स्वर क्, त्, प् के बाद होगा तो इनके स्थान पर क्रमशः ग्, द, ब् होते हैं।

१ को २ उदात्त पूर्व होने पर ।

१ को ३ उदात्त पर होने पर ।

उदात्त का चिह्न तिरछी लकीर (') द्वारा दिया गया है

संस्कृत	लैटिन	गाथिक	अंग्रेजी	ध्वनिपरिवर्तन-
युवक्'स्	Juvencus	Juggs	Young	क्>ग्
शत'म्	Centum	Hund	Hundered	त्>द्
सप्त'न्	Septem	Sibun	Seven	प्>ब्

8209837844 www.ugc-net.com

इनमें क, त्, प् के बाद उदात्त स्वर है, अत: इन्हें ह्, थ्, फ् न होकर ग्, द्, व् हुए हैं। भ्रा' तर् में त् से पहले उदात्त है, अत: गाथिक और अंग्रेजी में Brother में (t> th) त् को थ् मिलता है। ब्रॉथर को ही ब्रदर बोला जाता है। मिथ्या सादृश्य-वर्नर नियम के भी कुछ अपवाद मिलते हैं। इनका समाधान मिथ्या-सादृश्य (Analogy) के द्वारा किया जाता है। भ्रा'तर > Brother होता है। इसके सादृश्य पर ही अंग्रेजी में पित'र् > Father और मात' र् > Mother बनते हैं। इनमे वर्नर

के नियमानुसार त् > द् (t> d) होना चाहिए था, पर हुआ है त् > च् (t>Ch)। इसका कारण मिथ्या सादृश्य ही समझना चाहिए।

8209837844

.ugc-net.com

॥तालव्य नियम॥

(विल्हेम थामसन)

नियम-

इन तीनों ध्वनियों के स्थान पर 'अ' ध्वनि मिलती है।

ध्वनि	संस्कृत	लैटिन	ग्रीक
a>अ	अनिति	Animus	Anemas
e>अ	अहम्	Ego	Ego
e>अ	भरामि	Fero	Fero
e>अ	ददर्श	-	Dedorka
o>अ	अष्टौ	Octo	Octo
o>अ	अस्थि	Os	Osteon

8209837844 www.ugc-net.com

तालव्य नियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा में कवर्ग की 3 श्रेणियां मानी जाती हैं-

1. **शुद्ध कण्ठ्य** - क् ख् ग् घ्,
2. **कण्ठोष्ठय** - क्व् ख्व् ग्व् घ्व्,
3. **कण्ठतालव्य** - क्य् ख्य् ग्य् घ्य्,

मूल भारोपीय भाषा के शुद्ध कण्ठ्य और कण्ठोष्ठय ध्वनियों के बाद यदि कोई तालव्य स्वर (इ, ई, e,i) आता है तो कण्ठ्य ध्वनि के तालव्य ध्वनि (क्>च्), (ग्>ज्) हो जाती है।

(1>2 वर्ग) (क्>च्, (ग्>ज्)ट्

8209837844

www.ugc-net.com

॥मूर्धन्य नियम॥

संस्कृत में मूर्धन्य नियम का संकेत पाणिनी की अष्टाध्यायी में मिलता है। र् और ष् के बाद न् को ण् होता है। इ, ए, ओ आदि स्वर तथा क् आदि व्यञ्जनों के बाद स् को ष् होता है।

उदाहरण-

उत्तीर्ण, विष्णु, रामेषु, वाक्षु।

न्>ण् और **स्>ष** होना मूर्धन्यीकरण है।

मूर्धन्य नियम -

यदि मूल भाषा में र् या ल् के बाद तवर्ग होगा तो उसे टवर्ग हो जाता है। यदि मूल भाषा ऋ है और यदि वह हटता है या परिवर्तित होकर अ आदि होता है, तो परवर्ती तवर्ग को टवर्ग हो जाता है-

8209837844

www.ugc-net.com

उदाहरण-

मूल रूप	संस्कृत रूप	मूल रूप	संस्कृत रूप
कृत	कट (चटाई)	अवर्(वैदिक)	अवट (गड्ढा)
विकृत	विकट	गच्छ्(बढ़ना)	आढ्य(धनी)
संकृत	संकट	पृथति (वै-बताना)	पठति

Next class....

भारतीय आर्यभाषाएं-

WE WANT YOUR FEEDBACK

LIKE
& SHARE

For More Information….

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

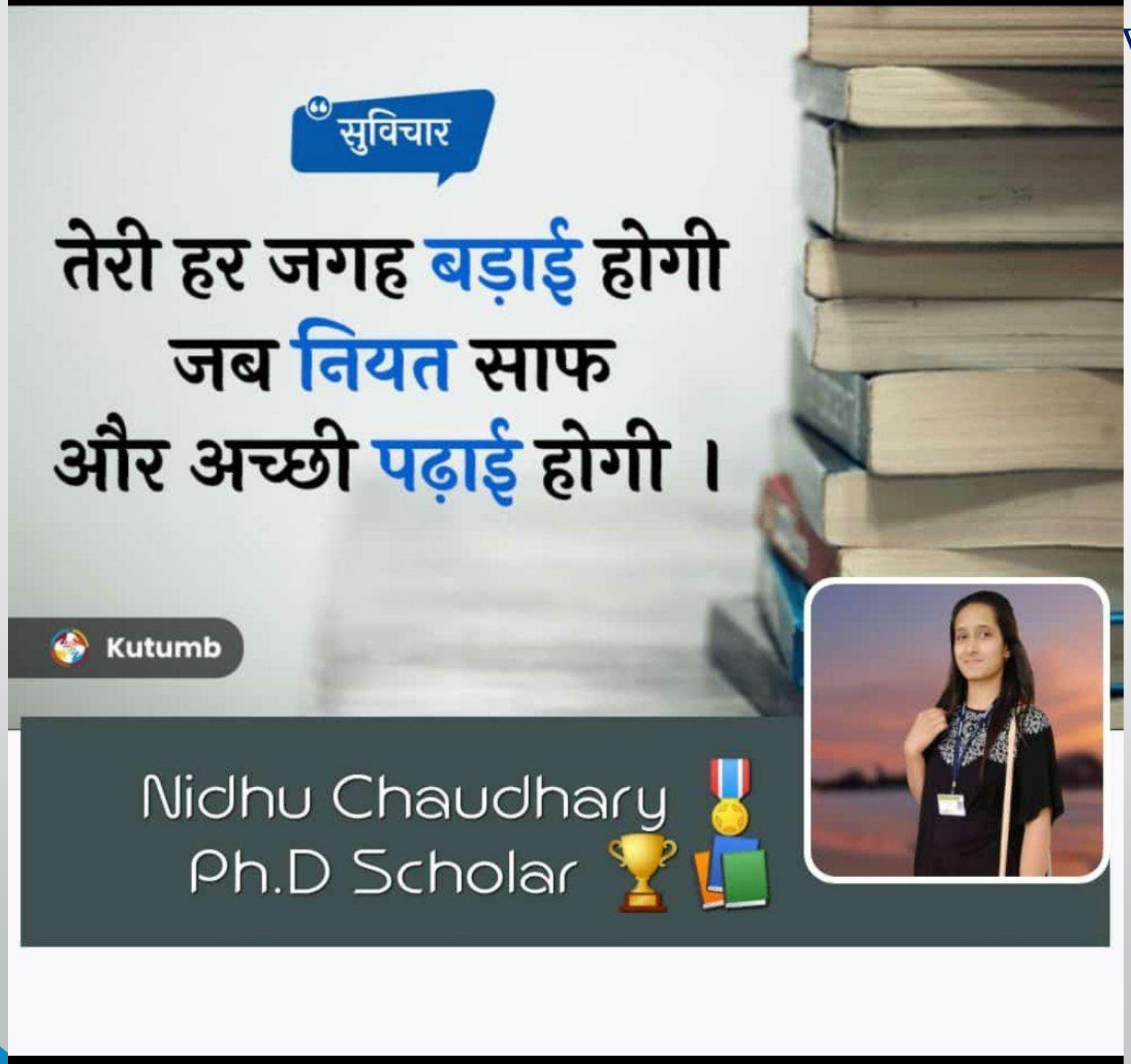

thank
you